International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 07
June 2017

प्रकृति के कुशल चितेरे पंतजी

कविता कुमारी
हिन्दी विभाग
एसिस्टैंट प्रोफेसर,
सी0आर0ए0 कॉलेज,
सोनीपत–131001

शोध सार आलेख– प्रकृति कवि सुमित्रानंदन पंत जी के प्रकृति के आलिंगन में आबद्ध होकर नारी के रुप वैभव को भी ठुकरा दिया विश्व केनव जाने कितने कवियों ने प्रकृति का चित्रण अपने काव्य में किया है। किन्तु प्रकृति के प्रति जैसा गहरा अनुराग इस महाकवि का परिलक्षित हुआ है वैसा हमें किसी अन्य में दृष्टिगोचर नहीं होता। प्रकृति उनके लिए काव्य की वस्तु और उनकी साज–सज्जा का साधन ही नहीं, अपितु उनकी काव्य प्रेरणा का स्त्रोत भी रही है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है। जिसका श्रेय मेरी जन्म–भूमि कुर्मांचल प्रदेश को है। कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है, मैं घण्टों एकान्त में बैठा, प्राकृतिक दृश्यों को एक टक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर एक अव्यक्त सौंदर्य का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था। जब कभी मैं आंखे मूंदकर लेटता था तो वह दृश्यपट चुपचाप मेरी आंखों के सामने घुमा करता था और यह शायद पर्वत–प्रान्त के वातावरण ही का प्रभाव है कि मेरे भीतर विश्व और जीन्स के प्रति एक गम्भीर आश्चर्य की भावना, पर्वत की तरह निश्चय रूप में अवस्थित है।

कठिन शब्द– आबद्ध, अनुराग, परिलक्षित

सार– कविवर सुमित्रानंदन प्रकृति के सकुमार कवि कहे जाते है। उनका जन्म 1900 ई0 में अल्मोडा जिले के कौसानी गांव में हुआ था इनका अध्ययन एम0ए0 तक काशी तथा प्रयोग में हुआ। ये संस्कृति, बांग्ला, अंग्रेजी की अच्छी जानकारी रखते थे। हिन्दी के छायावादी कवियों में इनका विशेष स्थान है प्रकृति सौंदर्य के ये प्रेमी है। कौसानी की प्राकृतिक सुषमा ने इन्हें वाणी दी। प्रकृति के साहचर्य ने वाणी को झंकार दी और वह

गीत बनकर गुंज उठी। बीगा और पल्लव प्राकृतिक सौंदर्य के शब्द चित्र हों ये प्रकृति के सौंदर्य के उपासक थे। इसी कारण इन्हें हिन्दी के सुकुमार कवि तथा प्रकृति के कुशल चितरे कवि कहा जाता है। प्रकृति की यह प्रेरणा कवि के लिए क्षणिक नहीं रही, अपितु वह उसके कवि जीवन का अंग बन गई है। कुर्माचल प्रदेश के उस शस्य श्पामल वातावरण से दूर हुए उन्हें वर्षों बीत गए किन्तु इससे उनके प्रकृति और समय के अनुसार उनके प्रकृति प्रेम सम्बन्धी दृष्टिकोण में थोड़ा बहुत परिवर्तन का क्रमिक अध्ययन हमारे इस कथन की सार्थकता प्रमाणित करेगा।

पंत की काव्य चेतना प्रकाशन सर्वप्रथम वीणा के सरस मृदुल, कोमल सवेरा से हुआ। इसके अधिकांश गीतों में प्रकृति रानी के ही वैभव का गुणगान हुआ है। कई स्थानों पर उसने प्रकृति को अपनी अध्यापिका मानकर उससे विभिन्न समस्याओं का समाधान मांगा है। प्रकृति के रूप वैभव और ज्ञान वैभव की तरंगों में कवि की आत्मा डूबकर लीन हो जाना चाहता है जिससे की वह भी प्रकृति जैसा दिव्य स्वरुप प्राप्त कर सके। मानव के शब्दों में – छाया से प्रार्थना करता है कि उसका मनस्ताप हरे अंधकार से कहता है कि उसे भी रंग रहित होकर जीवन व्यतीत करना, सिखाने सरिता से चाहता हैं कि वह उसी के समान गीत गा सके। निर्झर को देखकर उसकी कामना होती है कि वह भी उसी के समान आसुँओं का दान दे सके। वस्तुतः वीणा में कवि की प्रकृति के प्रति जिज्ञासा, आश्चर्य भावना और लालसा व्यक्त हुई है। वीणा का कवि प्रकृति के रुप वैभव को नारी सौंदर्य से भी बढ़कर मानता है। इसका एक कारण यह भी है कि अभी कवि पंत की आत्मा में यौवन के उस उन्मादी स्वर की झांकार प्रस्फुटित ही नहीं हुई थी, जिसके प्रभाव से बालाओं का सौंदर्य, सौंदर्य की अनुभूति प्रदान करने लगता हैं किन्तु ग्रन्थि में आकर कवि इस अनुभूति को प्राप्त कर लेता है। अतः प्रकृति के प्रति प्रारम्भिक आकर्षण में थोड़ी न्यूनता आ गई।

पंत जी के प्रकृति चित्रण की विशेषताओं का निरूपण हम इस प्रकार कर सकते हैं–

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 07
June 2017

1. अलम्बन रुप में प्रकृति चित्रण– जहां प्रकृति को आलम्बन बनाकर उसके नाना रुपों का चित्रण किया जाता है वहां आलम्बन रुप में प्रकृति चित्रण होता है। शास्त्रीय भाषा में इसे संश्लिष्ट प्रकृति चित्रण कहते हैं। पंत जी ने अनेक विताओं में इसका प्रयोग हुआ।

2. उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण– जहां प्रकृति मानवीय भावनाओं को अद्दीप्त करती है वह उद्दीपन रुप में प्रकृति चित्रण होता है। संयोग काल में सुख तथा वियोग काल में विरह वेदना को उद्दीप्त करना है। उद्दीप्पन वर्णन है मधुवन, गुंजन कविता में पंत जी ने इसका प्रयोग किया है।

3. सम्वेदनात्मक रुप में प्रकृति चित्रण– जहां प्रकृति मानव के साथ सम्वेदना व्यक्त करती हुई मानव की प्रसन्नता एवं हास उल्लास के क्षणों में स्वयं उल्लास व्यक्त करती है तथा दुख के क्षणों में स्वंय रुदन करती है जान पड़ती है वहां सम्वेदनात्मक रुप में प्रकृति चित्रण माना जाता है। पंत जी ने परिवर्तन कविता में मानव जीवन की क्षणभंमुरता को देखकर आकाश रोता सा प्रतीत होता और वायु विश्वास भरती सी लगती दिखाई है।

4. रहस्यात्मक रुप में प्रकृति चित्रण– छायावादी कवि पंत ने प्रकृति में उस अज्ञात अगोचर सता के दर्शन जहां किए है वहां रहस्यात्मक रुप में प्रकृति चित्रण माना गया है। पंत की मौन निमन्त्रण कविता इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। क्योंकि इसमें कवि को सर्वत्र उस अज्ञात सत्ता के मौन निमंत्रण का आभास होता है।

5. प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति चित्रण– पंत जी ने प्रकृति के उपकरणों को प्रतीकों के रुप में प्रयुक्त किया है। उर की डाली कविता में पंत जी ने फूल को आनन्द एवं उल्लास का प्रतीक माना है।

6. अलंकार योजना के रुप में प्रकृति चित्रण– पंत जी ने प्रकृति का चित्रण अलंकार निरुपण में भी किया है। उन्हें उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण आदि अलंकार विशेष प्रिय है।

7. मानवीकरण रुप में– पंत जी ने प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोप करते हुए उसे मानव की भांति हंसते–रोते एवं विविध क्रियाकलाप करते हुए दिखाया है। पंत जी ने छाया, बादल, संध्या अनेक कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण किया है, गंगा को एक तवंगी नायिका के समान दिखाया है।

8. लोक शिक्षा के रूप में प्रकृति चित्रण– प्रकृति हमें अनेक प्रकार की शिक्षाएं भी दे देती है। प्रकृति की परिवर्तनशीलता हमें यह बताती है कि जीवन परिवर्तनशील है जीवन में सुख दुख का चक्र उसी प्रकार चलता है जैसे प्रकृति में वसंत के दिन हमेशा नहीं रहते। कविवर पंत ने प्रकृति का सम्पूर्ण सौंदर्य अपनी कविताओं में समेटने का स्तुल्य प्रयास किया है। वे प्रकृति के कुशल चितेरे है। पंत जी ने प्रकृति के ताने बाने में मानव आत्मा का रुप रंग भरकर उसका अपूर्व अंकन किया है।

यही कारण है कि पल्लव की कविताओं में प्रकृति प्रेम की गहराई के स्थान पर उसका काल्पनिक वर्णन उपलब्ध होता है। पल्लव में प्रकृति का चित्रण विस्तृत होते हुए भी भावोतेजक नहीं है। युगान्त में कवि सौंदर्य से शिव की और अग्रसर हो गया है। अतः तब वह प्रकृति के रुप की अपेक्षा उसके उपयोग को अधिक महत्व देने लगे है वह संसार की विषमता दूर करने के लिए युग परिवर्तन की आकांक्षा प्रकट करता है। अतः वह चाहता है कि कोकिल मधुर गानों के स्थान पर पावक–कण बरसावे। जिससे संसार की प्राचीन रुढ़िया भस्म हो जाए। युग वाणी और ग्राम्या में भी इसी दृष्टिकोण का विकास हुआ है। ग्राम्या में उसने प्रकृति के वैभवपूर्ण अंगों के स्थान पर उसकी दरिद्रावस्था का चित्रण किया है। स्वर्ग–किरण, स्वर्ग–धूलि और उतरा में कवि पुनः यथार्थ से आदर्श को और उन्मुख हुआ है। अतः इसमें प्रकृति के विराट रूप का चित्रण हुआ है। वह उसके बाह्य स्वरुप की अपेक्षा उसकी सुक्ष्म आत्मा के उद्घाटन में प्रकृत हुआ है। एक विलक्षण बात इन रचनाओं में यह पाई गई कि यहां प्रकृति से अधिक व्यक्ति प्रमुख हो गया है। व्यक्ति जैसे देवता है प्रकृति उसकी उपासिका मात्र। कहा वीणा की वह प्रकृति जब व्यक्ति प्रकृति के चरणों में बैठकर शांति प्राप्त करता है और

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 07
June 2017

कहां उतरा की यह प्रवृति जब व्यक्ति प्रकृति को अपने चरणों में बिठा लेता हैं अतिमा में प्रकृति वर्णन की विभिन्न शैलियों का प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार वीणा से लेकर अतिमा तक पंत ने प्रकृति का वर्णन विविध प्रकार से किया है।

आलम्बन रूप में– जहां प्रकृति – वर्णन विशुद्ध प्रकृति वर्णन के दृष्टिकोण से किया जाता है उसे आलम्बन रूप से माना जाता है। पंत जी ने प्रकृति के आलम्बन रूप की प्रत्येक शैली का प्रयोग उचित प्रकार से किया है।